ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
# आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मन्त्रश्रुत्यं चरामसि। सामवेद 176
हम वेद मन्त्र के अनुसार आचरण करें।
We should behave & Perform in accord with the advice of Vedic hymns.

वर्ष 41, अंक 24 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 अप्रैल, 2018 से रविवार 8 अप्रैल, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न

### महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वि जन्मशताब्दी के समारोहों के शुभारम्भ के तौर पर आयोजित होगा
# अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

### महाशय धर्मपाल जी होंगे महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष अन्तरंग सभा का सर्वसम्मत निर्णय

### आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान होंगे प्रान्तीय महासम्मेलन अभियान समिति के संयोजक

**अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को ऐतिहासिक बनाने के लिए अभी से तैयारी करें प्रान्तीय सभाएं - सुरेशचन्द्र आर्य**

**वर्ष 2018 का दिल्ली महासम्मेलन पूर्व के महासम्मेलनों और अधिक भव्य एवं विशाल होगा - धर्मपाल आर्य**

**सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं सक्रीय कार्यकर्ताओं के साथ क्षेत्रों में बैठकों की तैयारियां करें - प्रकाश आर्य**

**आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, कनार्टक, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्य भारत, मुम्बई, मध्य प्रदेश एवं विदर्भ, गुजरात एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सहित 18 सभाओं के पदाधिकारी हुए सम्मिलित**

दिनांक 25 मार्च 2018 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कैम्प कार्यालय 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग बैठक का दोपरह 2 बजे से आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य ने की।

सभा मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी ने गायत्री मन्त्रोच्चार के साथ बैठक का आरम्भ की। सर्वप्रथम दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई

सदस्यो ने इस सम्बन्ध में खुलकर अपने विचार व्यक्त किए। उपस्थित सदस्यों ने एकमत से कहा कि आर्यसमाज का अपना एक सिद्धान्त पक्ष है और इसकी मजबूती

के लिए पांच सदस्यीय समिति का गठन किया गया जिसमें सर्वश्री धर्मपाल आर्य जी, मा. रामपाल जी, विनय आर्य जी, प्रकाश आर्य जी एवं श्री प्रेम भारद्वाज जी

प्रधान सुरेशचन्द्र आर्य जी को जजों के सामने अपना पक्ष रखने के लिए अधिकृत किया जाए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द चेयर को निरस्त

**आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने उठाया पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ में दयानन्द चेयर को निरस्त करने का मामला**

**(ऊपर) अन्तरंग सभा बैठक की अध्यक्षता करते सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य। साथ में हैं मेघालय के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी, महाशय धर्मपाल जी, उप प्रधान डॉ. राधाकृष्ण वर्मा एवं एम.डी.एच. परिवार के श्री प्रेम अरोड़ा जी। (नीचे) बैठक में पधारे अन्तरंग सदस्य एवं देशभर की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारीगण**

सार्वदेशिक सभा के एकता प्रकरण के विषय में बैठक में विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में उपस्थित प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं अधिकारियों एवं सभा के अन्तरंग

को देखते हुए सिद्धान्त पक्ष से कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। कोई कमजोर नीति का निर्णय नहीं किया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में विस्तृत विचार-विमर्श करने

को सदस्य के रूप में सम्मिलित किया गया। समिति अपने सुझाव सभा के समक्ष रखेगी। यह भी निर्णय हुआ कि श्री प्रकाश आर्य जी, श्री विनय आर्य जी एवं सभा

करने का मामला उठाया। इस पर सर्वसम्मति प्रस्ताव पारित हुआ कि प्रत्येक सभा की ओर से राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति

**- शेष पृष्ठ 4 पर**

### 95वें जन्मदिवस के अवसर पर महाशय धर्मपाल जी द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने के लिए प्रत्येक प्रान्तीय सभा में "महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक प्रचारक निधि" की स्थापना की जाएगी आर्य प्रतिनिधि सभाओं को इस हेतु दी जाएगी 1 लाख 51 हजार की राशि

**वेद-स्वाध्याय**

# अमोघशक्तियुक्त संकल्पधारी महात्मा

**अहमेताञ्छाश्वसतो द्वाद्वेन्द्रं ये वज्रं युधयेऽकृण्वत।**
**आह्वयमानां अव हन्मनाहनं दृळ्हा वदन्ननमस्युर्नमस्विनः।।** -ऋ. 10/48/6
**ऋषिः इन्द्रो वैकुण्डः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः आर्चीस्वराड्जगती।।**

**शब्दार्थ - ये द्वा द्वा** = जो ये दो-दो करके आनेवाले द्वन्द्व **वज्रं इन्द्रम्** = मुझ वज्रवाले इन्द्र को **युधये अकृण्वत** = युद्ध के लिए बाधित करते हैं, **एतान् शाश्वसतः आह्वयमानान् नमस्विनः** = उन इन बड़े बलवान् दिखाई देनेवाले और ललकारनेवाले, किन्तु अन्त में झुक जाने वाले द्वन्द्वों को **अहं अनमस्युः** = मैं कभी न झुकनेवाला **दृळ्हा वदन्** = दृढ़ वाणियां बोलते हुए मैं आत्मा **हन्मना** = अपने हथियार से, अपनी वाक्-शक्ति से या सङ्कल्प-बल से अव **अहनम्** = मार गिराता हूं।

**विनय** - मैं आत्मा अपरिमित बल वाला हूं, पर फिर भी संसार के द्वन्द्व मुझसे युद्ध करने के लिए आते हैं। ये मुझे दबाना चाहते हैं। ये नहीं जानते कि मैं वज्रवाला हूं, अमोघशक्तियुक्त संकल्प-बल रखता हूं। ये द्वन्द्व बड़े शक्तिशाली दीखते हैं और वास्तव में सब संसार इन्होंने दबा भी रखा है। सब प्राणी गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास, प्रिय-अप्रिय आदि द्वन्द्वों से सताये हुए हैं, सुख-दुःख के द्वन्द्व के चक्के में सब संसार घूम रहा है। सूक्ष्म राग द्वेष रूप में रहता हुआ यह द्वन्द्व बड़े उच्च पुरुषों का भी पीछा नहीं छोड़ता, पर द्वन्द्वों का यह सब बल तभी तक है जब तक कि इनका साम्मुख्य मुझ आत्मा से नहीं होता। यद्यपि दो-दो (युगल) का नया-नया रूप धरकर सब संसार में व्यापा हुआ यह महाबली द्वन्द्व मुझ आत्मा के सामने भी बड़ा बल दिखाता हुआ और ललकारता हुआ आता है, पर मेरे सामने उसे नम होना पड़ता है। गर्मी-सर्दी, सुख-दुःख, जय-पराजय, मान-अपमान, इन सब द्वन्द्वों को, इसकी जगह कि ये अपनी द्वन्द्वता में मुझे बांधें, स्वयं अपनी द्वन्द्वता छोड़कर एक होकर नम हो जाना अर्थात् समाप्त होना पड़ता है। ये चाहे कितने बली हों, पर अन्ततः ये परिणामी, अनित्य प्रकृति के बने हुए हैं। इनमें परिणाम व परिवर्तन आ जाना, इनका झुक जाना स्वाभाविक है। मैं नित्य, अपरिणामी, कभी न झुकनेवाला आत्मा हूं। मैं कैसे दब सकता हूं? मेरे तेज, वाग्वज्र, सङ्कल्पबल के सामने इन्हें ही दबना होता है। क्या मनुष्य शीतोष्ण, लाभ-हानि, हर्ष-शोक को सह नहीं सकता? जिस-जिस शरीर में आत्मा इन सबको सहना चाहता है, वहां-वहां आत्मा की दृढ़सङ्कल्पमय सहनशक्ति के सामने ये ठहर नहीं सकते। मैं आत्मा जब दृढ़ता से कहता हूं कि ''मुझे गर्मी-सर्दी हानि नहीं पहुंचा सकती'', ''मैं सुख से सुखी और दुःख से दुःखी नहीं होऊंगा'', ''मैं सिद्धि और असिद्धि में सम रहूंगा'' तो मेरे इन दृढवचनों के उच्चारण के साथ चलाये गये मेरे महान् वाग्-वज्र से मैं द्वन्द्व 'बलिष्ठ-से-बलिष्ठ रूप में विद्यमान द्वन्द्व को-मार डालता हूं। अन्त में मैं सूक्ष्म राग द्वेष की भी समाप्ति कर पूर्ण विजयी हो जाता हूं।

**-: साभार :-**
**वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

**सम्पादकीय**

# मुनाफे के बाजार में अब आयुर्वेदिक अण्डे

**.....असल में आयुर्वेदिक अण्डों की बिक्री देश में शुरू हो चुकी है। तेलुगु समाचार पत्र इनाडु में प्रकाशित खबर की माने तो आयुर्वेदिक अंडे की बिक्री तेलुगु भाषी कई राज्यों के साथ बेंगलुरु में भी की जा रही है। सौभाग्य पोल्ट्री द्वारा इसे आयुर्वैदिक बताकर दक्षिण भारत में बेचा जा रहा है।....**

जो अंडे अभी तक सिर्फ अंडे थे जिसे शाकाहार की श्रेणी में नहीं रखा जा रहा था अब वे अचानक से आयुर्वैदिक हो गये हैं। अंडे के फायदे, नुकसान और उपयोग को लेकर भले ही सबके अपने-अपने दावे और तर्क हों, पर सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुक्कुट अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र के अनुसार उनके अंडे को आयुर्वैदिक इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि इस प्रक्रिया में मुर्गियों को जो आहार दिया जाता है उसमें आयुर्वैदिक जड़ी-बूटियों का मिश्रण होता है। मतलब मुर्गियों को मुनक्खा, किशमिश, बादाम और छुआरे आदि परोसे जा रहें तो उनसें पैदा होने वाले अंडे आयुर्वेदिक कहे जा रहे है।

असल में आयुर्वैदिक अण्डों की बिक्री देश में शुरू हो चुकी है। तेलुगु समाचार पत्र इनाडु में प्रकाशित खबर की माने तो आयुर्वेदिक अंडे की बिक्री तेलुगु भाषी कई राज्यों के साथ बेंगलुरु में भी की जा रही है। सौभाग्य पोल्ट्री द्वारा इसे आर्युवेदिक बताकर दक्षिण भारत में बेचा जा रहा है। बात सिर्फ अंडे तक सीमित नहीं है। समाचार पत्र का दावा है कि अंडे ही नहीं बल्कि आयुर्वेदिक मुर्गियों का मीट भी हैदराबाद में उपलब्ध है।

इसे कुछ दूसरे तरीके से भी समझा जा सकता है कि अभी तक मुर्गियों से ज्यादा से ज्यादा अंडे प्राप्त करने के लिए स्टेरॉयड्स, हार्मोन्स और एंटी-बायोटिक्स (प्रतिजैविक पदार्थ) का इंजेक्शन दिया जाता है। लेकिन इन मुर्गियों को दिया जाने वाला आहार पूरी तरह आयुर्वेदिक है, तो उनके अनुसार अंडे भी आयुर्वैदिक हो गये और उसका मांस भी।

बकरी भैंस भी घास-पात खेतों में खड़ी जड़ी-बूटियां खाती हैं तो इस तरह तो उसका मांस भी आयुर्वेदिक हो जायेगा? क्या ऐसा हो सकता है कि कोई महिला शाकाहारी है। उसका खान-पान प्राकृतिक है तो उसके बच्चे को आयुर्वेदिक बच्चा कहा जाये? हो सकता है कल कहा जाये कि काजू, मखाने, पिस्ता खाने वाली और शरबत पीने वाली गाय का बीफ भी आयुर्वेदिक है? क्योंकि जब बाजार पर पूंजीवाद हावी हो जाए, तो आगे ऐसी खबरें लोगों के लिए सुनना और पढना कोई नई बात नहीं रह जाएगी।

आर्युर्वैद के संदर्भ में बात जब होती है तो मन में अपने आप उसकी महानता का आध्यात्मिक और धार्मिक भाव पैदा हो जाता है। विश्व की सभी सांस्कृतियों में, अपने देश की संस्कृति न सिर्फ प्राचीन ही है बल्कि सर्वश्रेष्ठ और बेजोड़ भी है। हमारी सभ्यता संस्कृति और सभ्यता के मूल स्रोत और आधार हैं वेद, जोकि मानव जाति के पुस्तकालय में सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं और इन्हीं की एक शाखा को आयुर्वैद भी कहा जाता है। आयुर्वेद के तीन आचार्यो की गणना मुख्यरूप से होती है उनमें महर्षि चरक, सुश्रुत के बाद महर्षि वाग्भट का नाम आता है। इस ग्रन्थ का निर्माण वेदों और ऋषियों के अभिमतों तथा अनुभव के आधार पर किया गया है। कहा जाता है इस ग्रन्थ के पठन-पाठन, मनन एवं प्रयोग करने से निश्चय ही दीर्घ जीवन आरोग्य धर्म, अर्थ, सुख तथा यश की प्राप्ति होती है।

आयुर्वैद का ज्ञान बहुत ही विशाल है। इसमें ही ऐसी प्रणाली का ज्ञान है, जो मानव को निरोगी रहते हुए स्वस्थ लम्बी आयु तक जीवित रहने की लिये मार्ग प्रशस्त कराता है, जबकि मांसाहारी भोजन में तमतत्त्व की अधिकता होने के कारण मानव मन में अनेक अभिलाषाएं एवं अन्य तामसिक विचार जैसे लैंगिक विचार, लोभ, क्रोध आदि उत्पन्न होते हैं। शाकाहारी भोजन में सत्त्व तत्त्व अधिक मात्रा में होने के कारण वह आध्यात्मिक साधना के लिए पोषक होता है।

आयुर्वेद के आध्यात्मिक संदर्भ में यदि गहराई से झांके तो अंडे खाने से मन पूरी तरह से आध्यात्मिकता प्राप्त करने का विरोध करता है। क्योंकि आध्यात्मिकता के दृष्टिकोण से आयुर्वैद की अपने आप में एक पवित्रता है! आयुर्वेद के अनुसार अंडे प्राकृतिक है खाद्य पदार्थ नहीं हैं। अंडे मुर्गियों के बच्चों की तरह हैं, क्या किसी का बच्चा खाना आध्यात्म की दृष्टि से पवित्र हो सकता है? आयुर्वेद में अपवित्र खाद्य पदार्थो की अनुमति नहीं है और कोई मुर्गी स्वाभाविक रूप से अंडे नहीं देती है अंडा पाने के लिए मुर्गियों के कुछ हार्मोनों को उत्तेजित करने के लिए इंजेक्ट किया जाता है जोकि निःसंदेह अप्राकृतिक हैं।

भोजन के लिए बेचे जाने वाले अंडे आध्यात्मिकता को विकसित करने के बजाय मुनाफा कमाने के लिए आयुर्वेद के नाम का सिर्फ घूंघट ओढ़ाया जा रहा हैं। आयुर्वेद के नाम पर संतुलित भोजन बताकर बेचने वाले वेदों, उपवेदों का अपमान ही नहीं बल्कि पाप भी कर रहें हैं। मांस के समान, अंडे तामासिक खाद्य पदार्थ हैं आयुर्वेद अंडे खाने पर रोक लगाता है क्योंकि यह शारीरिक और भावनात्मक उग्रता को बढ़ाता है। आयुर्वेद में जब कहीं भी मांस को भोजन या दवा की श्रेणी में नहीं रखा है तो आयुर्वेद में अंडे कहाँ से आ गये?

***- सम्पादकीय***


**आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा**
**समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित**

**नैतिक शिक्षा की पुस्तकें**

**नर्सरी से 12वीं कक्षा तक**

**आकर्षक छूट 25%**

**बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।**

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001**
**☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com**

# क्या आप अंधविश्वासों का पालन करते हैं? पर क्यों?

***....पिछले दिनों मैं कई ऐसे लोगों से मिला जो कहते हैं कि हम वैसे तो कर्म में विश्वास करते हैं लेकिन मेरी एक गुलाबी कलर की शर्ट है, जब भी मैं उसे पहनता हूँ मेरे सारे काम ठीक होते हैं। दूसरे ने बताया कि वैसे मैं अन्धविश्वास में यकीन नहीं करता लेकिन मेरे पर्स में एक सिक्का है जो मेरे लिए शुभ है और मेरी घड़ी मेरे लिए बहुत लकी है।....***

क्या ऐसा हो सकता है कि आप खुद को अंधविश्वासी न मानते हुए भी अन्धविश्वासी हों। जैसे कुछ विचित्र अनुष्ठानों के सामने आप सिर झुकाते हों, बिल्ली को देखकर रास्ता बदल देते हों, मंगलवार को नाखून या बाल कटवाने से डरते हों, कोई छींक दे और आप कुछ पल को रुक जायें, कपड़े या नग-नगीने के टुकड़े को भाग्यशाली समझ कर पहनते हों, या फिर उन चीजों का पालन करते हों जो समझ से परे हैं बस इस विश्वास के साथ कि किसी न किसी तरह यह चीजें आपके अच्छे के लिए काम करती हों?

पिछले दिनों मैं कई ऐसे लोगों से मिला जो कहते हैं कि हम वैसे तो कर्म में विश्वास करते हैं लेकिन मेरी एक गुलाबी कलर की शर्ट है, जब भी मैं उसे पहनता हूँ मेरे सारे काम ठीक होते हैं। दूसरे ने बताया कि वैसे मैं अन्धविश्वास में यकीन नहीं करता लेकिन मेरे पर्स में एक सिक्का है जो मेरे लिए शुभ है और मेरी घड़ी मेरे लिए बहुत लकी है। किसी ने गाड़ी का नम्बर शुभ बताया तो किसी के घर के बाहर काली हांड़ी लटकी मिली। एक दो लोग ऐसे भी मिले जो किसी भी धारणा में विश्वास नहीं करते थे यहाँ तक कि जब मैंने उनके सामने ईश्वर को ऊपर वाला कहा तो उन्होंने कहा ''क्या ऊपर वाला?'' ईश्वर ऊपर नीचे नहीं वह तो सर्वव्यापक है।

कमीज का रंग गुलाबी होना या घड़ी का भाग्यवान होना ये बात जीवन में तर्क संगत नहीं बैठती। हाँ कई बार कुछ कपड़े या सामान ऐसे होते हैं जो हमारे अन्दर आत्मविश्वास पैदा करते हैं। लेकिन जब आत्मविश्वास की जगह अंधविश्वास पैदा हो जाये तो समझिये कि आप गलत दिशा में जा रहे हैं। आमतौर पर एक कपटपूर्ण शब्द है अन्धविश्वास जैसाकि सामाजिक अध्ययन में बार-बार देखा जाता है कि कुछ लोग ईश्वर को अलौकिक शक्ति मानने के साथ ही कई बार एक सूक्ष्म और बेहोश धारणा में विश्वास भी करते से दिख जाते हैं। हानि या खतरे से बचने के बीच सम्बन्ध बनाए जाते हैं अर्थात् इसे एक किस्म का सौदा भी कहा जाये तो गलत नहीं होगा। क्योंकि ये ईश्वर और लोगों की कामना के बीच होता है। ये सौदा या तो कोई कथित बाबा या फिर कोई ज्योतिषी तय करवाता है, असल खतरे की काल्पनिक अवस्था को जो लोग मोल लेते हैं तो मोल चुकाते भी हैं।

अनहोनी या दुर्घटना तथा अन्य किसी बुरे की आशंका को अन्धविश्वास का जन्मदाता कहा जाता है। कुछ ऐसे जैसे ब्रह्मांड में आपके खिलाफ कोई साजिश रची जा रही हो और उस साजिश को असफल करने के लिए छुटपुट प्रयास आप कर रहे हों! जब मन में दुर्घटना आदि का कोई विचार कूद जाता है तो इसके पीछे खड़ी सावधानी के बजाय इन्सान के मन में पहले अन्धविश्वास कूद जाता है। इसके बाद अधिकांश लोग खतरे से बचने के लिए उसी तर्क से सहमत होते हैं जो उन्हें सरल लगता है।

अगर आप मौत, दु:ख, हानि आदि समस्त कष्टों को चकमा देने के प्रयास में कोई धार्मिक क्रिया कर रहे हैं और यदि आपका जवाब हां से है तो यह क्रिया ईश्वर के अस्तित्व को नकार रही है। क्योंकि घटना, दु:ख, सुख होनी-अनहोनी के साथ तर्कसंगत विश्वास बना लिया गया है कि परिस्थिति कुछ धार्मिक अनुष्ठानों जैसे प्रसाद चढाने, भंडारा करने, कीर्तन या जागरण आदि से अपना रास्ता बदल देती है और कुछ लौकिक घटनाएँ अपने पक्ष में हो जाती हैं और बुरी घटनाएँ समाप्त हो जाती हैं।

आज कई संस्कृतियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके अंधविश्वास में उन मान्यताओं को नामित किया जाता है जो अज्ञानता और अज्ञान के डर से उत्पन्न हुई थीं। कई अंधविश्वासों, प्रथाओं और प्राकृतिक घटनाओं की झूठी व्याख्याओं के कारण हैं। इसमें सबसे पहली बात ये है कि अन्धविश्वास और धर्म का दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं है लेकिन इसके बावजूद कई जगह इसे बड़ी सफाई से धर्म से जोड़ दिया गया है। इस कारण आज यदि कोई अन्धविश्वास को नकारेगा तो उसे धर्म के विरुद्ध माना जाता है। कई जगह इसे सांस्कृतिक परम्पराओं से जोड़ दिया गया है। बीमारी से निपटने के लिए या अच्छे को लाने, भविष्य की भविष्यवाणी, कुछ विशिष्ट लोक परंपराएं, जैसे बुरी नजर और ताबीज की प्रभावकारिता आदि।

लोग अंधविश्वासी क्यों बनते हैं? दरअसल एक तो लोग जिनसे प्रभावित होते है उनका अनुकरण करते है। यदि वह अंधविश्वासी हैं तो लोग भी अंधविश्वासी हो जाते हैं। दूसरा परिवार के बड़े बुजुर्ग, सामाजिक परम्परा, कल्पनाशील कहानियां, ये सब मिलकर इन्सान को अन्धविश्वासी बना डालती हैं।

हालाँकि यह भगवान पर विश्वास की कमी का उल्लेख करता है। इससे लोगों को भाग्य को दोष देने से अपनी गलतियों को छिपाने में सहायता मिलती है, उनके अनुसार भगवान को छोड़कर कोई भी नियंत्रण नहीं कर सकता। तो इन्सान कुछ पैसे, कुछ भोग आदि का जुगाड़ करता है। भाग्य को अपने नियन्त्रण में करने के लिए शायद ये रिश्वत हो? यदि सब अकेले ना कर सकें तो सामाजिक रूप से, नहीं तो किसी ज्योतिषी को पैसे देकर यह क्रिया करा सकते हैं। तनाव और गरीबी भी अंधविश्वास की हमराही बनती है। कहते हैं लोग उन सभी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के कारणों को खोजने के लिए प्रयास करते हैं। जिन घटनाओं की व्याख्या को भाग्य कहा जाता है। आधुनिकता और आत्मज्ञान के बाद, अंधविश्वासी विश्वास अभी भी हमारे देश में बना हुआ है। यदि आप मुझसे असहमत हैं तो आप अपने बारे में जांचें अपना मूल्यांकन करें कि क्या आप अन्धविश्वासी हैं! पर क्यों? ***-विनय आर्य, महामन्त्री***

**बोध कथा** **मोह ममता के रिश्ते हैं सब, कोई नहीं यहां अपना रे!**

**गतांक से आगे -**

मां बोली-'कैसी बातें करता है तू! तुझे कुछ नहीं होगा। जा, थोड़ा विश्राम कर ले। मैं अभी तेरे पिता जी को बुलाती हूं।'

युवक अपने कमरे में गया। पलंग पर लेटा। कुछ देर पश्चात् उसने प्राणायाम के द्वारा अपने प्राण चढ़ा लिये। सांस रुक गई। थोड़ी ही देर में शरीर ठण्डा होने लगा। कोई आध घंटे पश्चात् उसकी पत्नी अन्दर आ गई। उसने देखा, हिलाया, बुलाया, नब्ज़ देखी और चीख़ती हुई बाहर आ गई; बोली-''माताजी! ओ माता जी! देखो वह अन्दर क्या हो गया है?'' पत्नी ने सिसकते हुए फिर कहा-''वे ....वे बोलते नहीं, हिलते नहीं, शरीर ठण्डा है!''

मां दौड़ती हुई अन्दर गई; देखा-पुत्र का शरीर बर्फ़ की भांति ठण्डा है। उसने माथा पीट लिया। घर में शोक छा गया। दुकान से पिताजी दौड़े-दौड़े आये। डॉक्टर, वैद्य, हकीम भी आये। सबने देखा। सबने कहा-''यह तो समाप्त हो चुका। इसमें कुछ शेष नहीं।''

घर में रोना-पीटना आरम्भ हो गया। रोनेवालों की चीख़ों से घर की दीवारें गूंज उठीं। मुहल्लेवाले भी आये। सब रो-रोकर शोक प्रकट करने लगे। सब कहने लगे-देखो कितना अच्छा हो गया था यह युवक! जब से साधु के पास गया, तब से जैसे इसका जीवन ही बदल गया था। सबके साथ मीठा बोलता था। सबके काम आता था। सबकी सहायता करता था। और अब...

परन्तु कब तक रोते वे लोग! मुहल्लेवालों ने कहा-''रोना तो सदा का है, परन्तु अब तो यह केवल मिट्ट है। उठाओ इसे, ले चलो श्मशान, अन्यथा बदबू उत्पन्न हो जायेगी।''

तब होने लगी तैयारी। सारा सामान आ गया। शरीर को नहला दिया गया। कफ़न भी ओढ़ा दिया गया। अर्थी पर रखने लगे तो मां को बेटे की बात याद आई। रोती हुई बोली-''अरे ठहरो! उसने कहा था कि मुझे श्मशान ले-जाने से पूर्व मेरे गुरुजी को बुला लेना।''

कुछ लोग जंगल की ओर दौड़े। साधु के पास पहुंचे; बोले-''आपके पास वह युवक आता था न! चलिये, उसका देहान्त हो गया है। घर में कुहराम मचा हुआ है। उसकी अर्थी को श्मशान ले-जाने की तैयारी हो चुकी है। चलकर देखो!''

महात्मा ने कहा-''अच्छा चलो, मैं देखता हूं।'' और कुटिया में जाकर एक पुड़िया उठा लाये। इस पुड़िया में उन्होंने मिश्री पीसकर बांध रखी थी। मिश्री की पुड़िया लेकर वे युवक के घर पहुंचे तो देखा कि चीख़ों से सारा घर ही नहीं, मुहल्ला भी गूंज रहा है।

*- महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती*

*साभार : बोध कथाएं*

**बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।**


## फिजियोथैरेपिस्ट चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित दीवानन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ अस्पताल, औचन्दी दिल्ली-110039 को एक अनुभवी बी.पी.टी. फिजियोथैरेपिस्ट की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। अनुभव न्यूनतम 3 वर्ष। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें-

**श्री महेन्द्र सिंह लोहचब, मन्त्री,**
**मो. 9999148483**


## 20वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 20वां परिचय सम्मेलन का आयोजन 6 मई, 2018 को आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **300/- रुपये** का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **खाता संख्या 910010001816166 IFSC - UTIB0000223 एक्सिज बैंक करोल बाग शाखा** में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन भेजने की **अन्तिम तिथि 26 अप्रैल, 2018** है। इसके बाद प्राप्त आवेदनों को विवरणिका में प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। पंजीकरण फॉर्म **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन भी कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

**अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक** (मो. 9414187428)

**एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली** ( मो. 9540040324)

**प्रथम पृष्ठ का शेष**

के नाम इस सन्दर्भ में पत्र लिखा जाए।

आर्यसमाजों की सम्पत्ति सुरक्षा के विषय में हिमाचल सभा के प्रधान श्री प्रबोधचन्द्र सूद जी ने बात रखी। निर्णय हुआ कि सम्पत्ति सुरक्षा के लिए नियम होने चाहिए। इस सम्बन्ध में सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी को समिति गठित करने के लिए अधिकृत किया गया।

बैठक में अन्तरंग सदस्य श्री गंगा प्रसाद जी के मेघालय के राज्यपाल बनने के बाद प्रथम बार पधारने पर सभी अधिकारियों ने पीत वस्त्र व शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। श्री गंगा प्रसाद जी ने कहा ''मेरी जो भी उपलब्धि है वह आर्य समाज के कारण ही है। हमारे राजभवन में हमेशा शाकाहारी भोजन ही बनता है। मैंने शपथ ग्रहण करने के बाद हवन करके ही घर में प्रवेश किया था।'' श्री गंगा प्रसाद जी ने आगे कहा 'अन्धविश्वास बड़ी तेजी से बढ़ रहा है तथा मीडिया वाले भी इसे बढ़ाने को अपना कर्त्तव्य मानते हैं। ईसाईयों ने हमारे समाज को झूठा चमत्कार दिखाकर, समाज को गुमराह किया है। इन सबसे देश व समाज को बचाने के लिए आर्य समाज को और दृढ़ बनाने की जरूरत है।''

गुरुकुल देवघर के विषय में जानकारी देते हुए सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने बताया कि शासन ने बिना पूर्व सूचना के प्राचीन गुरुकुल को तोड़ दिया, यह सनातन संस्कृति पर बड़ा आघात है। गुरुकुल हमारे महत्त्वपूर्ण स्थान हैं इसलिए शासन से क्यों न वही गुरुकुल बनाने की मांग की जाये? यदि सरकार हमारी बात नहीं मानती है तो वहां आन्दोलन किया जाये। इस पर चर्चा करते हुए यह निर्णय हुआ कि पहले आन्दोलन की पूरी रूपरेखा तैयार की जाए और इस सम्बन्ध में विरोध पत्र भेजे जावें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सम्बन्ध में श्री प्रकाश आर्य ने कहा कि सन् 2006 से यह कार्यक्रम चल रहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 5 वर्ष विदेश में होगा और 6वें वर्ष भारत में होगा। इसका लाभ भी मिला, नेपाल सिंगापुर एवं अन्य देशों में महासम्मेलन आयोजित हुए। इस वर्ष 25 से 28 अक्टूबर 2018 को दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र में यह अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जाएगा। महाशय धर्मपाल जी को इस वर्ष आयोजित होने वाले महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

श्री प्रकाश आर्य ने जानकारी देते हुए बताया कि सन् 2024 में महर्षि के जन्मदिवस को 200 वर्ष होंगे जिसे हम लोगों को विस्तृत रूप से मनाना है। अगर इसकी तैयारी अभी से प्रारम्भ की जावे तो 2024 में अभूतपूर्व विशाल कार्यक्रम करेंगे। 6 साल तक उसकी जानकारी जन-जन तक पहुंचाने की भावना से कार्यक्रम किये जावें। इस पर श्री विनय आर्य ने कहा कि इस वर्ष 2018 का यह महासम्मेलन वर्ष 2024 में महर्षि दयानन्द जी के द्वि जन्म शताब्दी वर्ष के शुभारम्भ के रूप में आयोजित होगा और उस वर्ष के विशाल सम्मेलन की रूपरेखा तय करेगा।

प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सभी प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारियों और उपस्थिति प्रतिनिधियों से कहा कि वे पूरी क्षमता से सहयोग करें ताकि सम्मेलन ऐतिहासिक बन सके।

उन्होंने कहा कि देश विदेश में बड़ी-बड़ी सभाएं एवं बैठकों का आयोजन किया जाएगा। उन्होनें प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों से निवेदन किया कि वे देश के कोने-कोने में जाकर आर्यजनों को महासम्मेलन में पधारने के लिए आमन्त्रित करें।

श्री विनय आर्य जी बताया कि यज्ञ की एकरूपता के विषय में कार्य चल रहा है और महासम्मेलन से पूर्व यज्ञ की एकरुपता पद्धति के प्रकाशन का कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा।

उन्होंने बताया कि महाशय धर्मपाल जी ने अपने 95वें जन्मदिवस के अवसर पर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने के लिए 'महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक प्रचारक निधि' की स्थापना करने की घोषणा की है। इसके अन्तर्गत उपस्थित आर्य प्रतिनिधि सभाओं को अपने यहां यह निधि स्थापित करने के लिए 1 लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि के चैक दिए जाएंगे। महाशय जी इस अवसर पर अपने एकाउंटेंट एवं सी.ए. को भी साथ लेकर आए है।

बैठक लगतार 4 घंटे तक चली। बैठक में प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, मन्त्री, अन्तरंग सदस्यों विशेष आमन्त्रित सदस्यों के रूप में भाग लिया और प्रचार प्रसार को बढ़ाने के लिए कार्य करने के लिए सभा का धन्यवाद किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा द्वारा देश विदेश में लिए जा रहे कार्यों को भी जानकारी हेतु साझा किया गया। - ***मन्त्री***

## यज्ञ की एकरूपता पद्धति के प्रकाशन का कार्य होगा अन्तर्राष्टीय आर्य महासम्मेलन से पहले पूर्ण

**पुस्तक परिचय**

## आर्य ध्वज

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने लम्बे समय से बाजार में अनुपलब्ध रही पुस्तक 'आर्य- ध्वज' का प्रकाशन किया है। यह पुस्तक आर्य समाज के लिए एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है क्योंकि आर्य ध्वज के सम्बन्ध में लोगों में अनेक भ्रान्तियां रही हैं जिनका निराकरण इस पुस्तक को पढ़ने से ही सम्भव हो सकता है।

वर्ष 1933 में श्रीमद्यानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर शताब्दी समिति की ओर से इस निमित्त एक समिति बनाई गयी थी जिसने 'आर्य ध्वज' के आकार-प्रकार, रंग-रूप की एक रूपता निर्धारित कर दी गयी थी जो इस पुस्तक में प्रकाशित है। आर्य ध्वज को फहराने के सम्बन्ध में अनेक लोगों में भ्रान्तियां थीं उनको इस पुस्तिका में दूर करके एक रूपता लाने का प्रयास किया गया है तथा कुछ लोगों ने इसी सार्वभौमिकता को चुनौती देते हुए विभिन्न न्यायालयों में याचिका भी दायर कीं जिनमें हाई कोर्ट व माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा आर्य ध्वज के पक्ष में दिये गये ऐतिहासिक फैसले को भी इस पुस्तक में स्थान दिया गया है।

आप भी इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक को अवश्य पढ़ें व अपने ईष्ट-मित्रों को पढ़ने के लिए दें। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें:-

**पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-**
**वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**
**15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,**
**मो. नं. 9540040339**

## इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा

### अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018 दिल्ली

### 25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

**समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट करें तथा इन तिथियों में आपना कोई भी आयोजन न रखें और दल-बल सहित अधिकाधिक संख्या में महासम्मेलन में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा इस सूचना को विभिन्न माध्यम से प्रचारित करें।**

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

पुण्य तिथि (30 मार्च ) पर विशेष

# महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के मानस पुत्र थे श्यामजी कृष्ण वर्मा

**....मात्र बीस वर्ष की आयु से ही वे क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने लगे थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा भारत माता के उन वीर सपूतों में से एक हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित कर दिया था। इंग्लैंड से पढ़ाई कर वापस भारत आकर कुछ समय के लिए वकालत की और फिर कुछ राजघरानों में दीवान के तौर पर कार्य किया पर ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों से त्रस्त होकर वह भारत से इंग्लैण्ड चले गये। लंदन में इंडिया हाउस के नाम से एक भवन का निर्माण किया जो कभी क्रांतिकारियों का तीर्थस्थल हुआ करता था।.....**

मार्च 1857 देश को अंग्रेजों शासन से मुक्ति दिलाने के लिए क्रांति का बिगुल बज चुका था। कई सौ सालों से गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता को स्वतंत्र कराने के लिए क्रांतिवीर अपने प्राणों की आहुति हँसते-खेलते दे रहे थे। उसी समय 4 अक्टूबर 1857 को गुजरात के कच्छ जिले के मांडवी गांव में एक बच्चे की किलकारी गूंजी जिनका नाम था श्यामजी कृष्ण वर्मा। किसे पता था कि आज पैदा होने वाला यह नन्हा सा बालक आने वाले समय में देश के क्रांतिकारियों के गुरु के रूप में जाना जायेगा।

पिता की असमय मृत्यु के बाद उनकी पढाई मुंबई के विल्सन कॉलेज से हुई। संस्कृत से उनका नाता यहीं से जुड़ा जो बाद में ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी में संस्कृत पढ़ाने के काम आया। उनकी पत्नी भानुमति एक सम्पन्न परिवार से थीं, इसी दौरान उनका सम्पर्क स्वामी दयानंद सरस्वती से हुआ और वे उनके शिष्य बन गए। पूरे देश में श्यामजी ने उनकी शिक्षाओं को प्रसारित करने के लिए दौरे किए। क्रांतिकारी गतिविधियों के माध्यम से आजादी के संकल्प को गतिशील करने वाले श्यामजी कृष्ण वर्मा पहले भारतीय थे, जिन्हें ऑक्सफोर्ड से एम.ए. और बैरिस्टर की उपाधियां मिली थी। यहां तक कि काशी में उनका भाषण सुनकर काशी के पंडितों ने उन्हें पंडित की उपाधि दे दी, ऐसी उपाधि पाने वाले वे पहले गैर ब्राह्मण थे।

मात्र बीस वर्ष की आयु से ही वे क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने लगे थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा भारत माता के उन वीर सपूतों में से एक हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित कर दिया था। इंग्लैंड से पढ़ाई कर वापस भारत आकर कुछ समय के लिए वकालत की और फिर कुछ राजघरानों में दीवान के तौर पर कार्य किया पर ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों से त्रस्त होकर वह भारत से इंग्लैण्ड चले गये। लंदन में इंडिया हाउस के नाम से एक भवन का निर्माण किया जो कभी क्रांतिकारियों का तीर्थस्थल हुआ करता था। वीर सावरकर से लेकर भीकाजी कामा तक और भाई परमानंद से लेकर कर्जन वाइली को लंदन में ही मारने वाले मदनलाल धींगरा तक हर उस क्रांतिकारी को इंडिया हाउस में पनाह मिली जो देश की आजादी का सपना संजोये हुये था। उस वक्त यह संस्था क्रांतिकारी छात्रों के जमावड़े के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध हुई।

श्यामजी कृष्ण वर्मा स्वामी दयानंद सरस्वती से प्रेरित ही नहीं बल्कि उनके कट्टर भक्त थे। 1918 के बर्लिन और इंग्लैंड में हुए विद्या सम्मेलनों में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया था। 1905 में लार्ड कर्जन की ज्यादतियों के विरुद्ध संघर्षरत रहे। इसी वर्ष इंग्लैंड से मासिक दा इंडियन सोशिओलॉजिस्ट प्रकाशित किया, जिसका प्रकाशन बाद में जिनेवा में भी किया गया। 1905 में उन्होंने क्रांतिकारी छात्रों को लेकर इंडियन होम रूल सोसायटी की स्थापना की थी।

इसके लिए श्याम जी कृष्ण वर्मा ने बाकायदा कई फॉलोशिप भी शुरू कीं। ऐसी ही एक शिवाजी फॉलोशिप के जरिए वीर सावरकर भी लंदन हाउस में रहने आए। इसी लंदन हाउस में सावरकर ने क्रांतिकारी मदन लाल धींगरा को हथियार चलाने की ट्रेनिंग दी, जिसने बाद में भारत सचिव वाइली की लंदन में ही गोली मारकर हत्या कर दी गई। उस समय भारत सचिव ब्रिटिश सरकार का वह अधिकारी या मंत्री होता था, जिसको भारत का वायसराय रिपोर्ट करता था। इस तरह से किसी भी ब्रिटिश अधिकारी के मारने की अब तक की ये सबके बड़ी घटना रही है, वह भी उनके घर में घुसकर यानी लंदन में। साफ है कि इंडिया हाउस युवा क्रांतिकारियों का गढ़ बनता चला गया।

समय गुजरता चला गया श्याम जी कृष्ण वर्मा पूरे वेग से देश की आजादी के लिए कार्य करते रहे लेकिन तारीख थी 30 मार्च 1930 और वक्त था रात के 11.

*- शेष पृष्ठ 7 पर*

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

## पं. महेन्द्रपाल आर्य जी की यू-टयूब वीडियो से प्रभावित होकर बना आर्य समाजी

मेरा नाम त्रिलोक शर्मा है। मेरा जन्म अलवर (राजस्थान) में हुआ था, शिक्षा पूर्ण करने के बाद मैं सरकारी अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएं बच्चों को प्रदान कर रहा हूं। बचपन से ही मेरी रुचि धार्मिक मामलों में रही है। ईश्वर है या नहीं? अगर है तो कहां रहता है? सबसे बड़े भगवान कौन हैं? सच्चा धर्म कौन सा है? ऐसे बहुत से प्रश्न मेरे जेहन में थे जिनका जवाब कहीं नहीं मिलता था।

एक बार जाकिर नाइक के यूटुब पर एक वीडियो देखी तो इस्लाम में रुचि बढ़ने लगी और इस्लाम मुझे खींचने लगा लेकिन मुझे फिर जाकिर की नीयत में खोट दिखने लगी और वीडियोज में उसका झूठ समझ में आने लगा और इस्लाम पर भी शक होने लगा। फिर एक दिन महबूब अली से महेन्द्रपाल आर्य बने आर्य समाजी की यूट्ब वीडियो देखी जिससे सच और झूठ में अंतर समझ आने लगा। उसके बाद मैं आर्य समाज में रुचि लेने लगा और www.thearyasamaj.org पर से कुछ पुस्तकें प्राप्त कीं तथा पढ़ीं। सत्यार्थ प्रकाश पढ़ी, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पढ़ी। इन पुस्तकों को पढ़ने के बाद मुझे झूठ और सच का पता चल गया और फिर मैंने आर्य समाजी बनने का दृढ़ संकल्प ले लिया। उसके बाद मैंने स्थानीय आर्य समाज मन्दिर में भी जाना शुरू कर दिया। इस तरह आज मैं त्रिलोक शर्मा नहीं त्रिलोक आर्य के नाम से पुकारा जाता हूं।

### मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों की सूचनार्थ है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** पुन: आरम्भ कर दिया गया है। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जाएगा जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें। हमारा पता है-

**सम्पादक, आर्य सन्देश साप्ताहिक, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**

मातृशक्ति

## बालकों के लिए सर्वश्रेष्ठ गाय का दूध

यूं तो गाय, भैंस, बकरी आदि सभी दुधारू जानवरों का दूध लाभप्रद है। किन्तु जितना गाय का दूध आबाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सबके लिये लाभप्रद है उतना अन्य किसी जानवर का नहीं। गाय के दूध में जहां शरीर के पोषणतत्व मौजूद हैं वहां उसमें प्रभु ने रोगनाशक शक्ति भी कूट-कूटकर भर दी है। इसीलिए बुद्धिमानों ने कहा है- भैंस का दूध जहां बल है, बकरी का दूध जहां औषध है, वहां गाय का दूध बल भी है और औषध ा भी। इस बात को न केवल भारतीय ऋषियों ने माना है प्रत्युत अन्य धर्म गुरुओं ने भी स्वीकार किया है। किन्तु यह तभी होना सम्भव है जबकि हम स्वयं अपने घर में गाय पालें और उसके ताजे, स्वच्छ तथा खालिस दूध का पान करें। बाजारू दूध तो नाना प्रकार के दोषों तथा मिलावटों के कारण कभी-कभी तो अमृत के स्थान पर विष का काम भी देता है। अत: प्रत्येक सदृगृहस्थ का यह परम कर्त्तव्य है कि वह स्वयं अपने घर में गाय रखने का प्रयत्न करे। इससे जहां उसे गौरक्षा का श्रेय प्राप्त होगा, वहां उसके अमृत तुल्य दुग्ध से उसका समस्त परिवार स्वस्थ, बलवान् तथा नीरोग बना रहेगा।

**दूध के गुण :** भावप्रकाश में दूध के निम्न गुण बताएं हैं-

''दूध-मधुर, चिकना, बादी और पित्त का नाशक, दस्तावर, वीर्यवर्धक, शीतल, सबके अनुकूल, सबको जीवन, पुष्टि देने वाला, बलकारक, बुद्धि को बढ़ाने वाला, सन्धानकारक, रसायन तथा ओज को बढ़ाने वाला है।'' दूध किन-किन रोगों को दूर करता है इसका भी सुन्दर वर्णन उपर्युक्त ग्रन्थ में किया गया है-

जीर्ण ज्वर, मानसिक रोग, उन्माद, शोष, मूर्छा, भ्रम, संग्रहणी, पीलिया, जलन, प्यास, हृदय रोग, शूल, उदावर्त, गोला, बस्ति रोग, बवासीर, रक्तपित्त, अतिसार, योनि रोग, परिश्रम, ग्लानि और गर्भस्राव को दूर करने वाला है। अब हम अलग-अलग दूध आदि के गुणों का वर्णन करते हैं।

वाग्भट्ट ने गाय के दूध के निम्न गुण बताए हैं- अन्य दूधों की अपेक्षा अधिक बलदायक, जीवनप्रद, रसायन, घाव को शीघ्र भरनेवाला, पवित्र, बलप्रद, स्त्री के स्तनों में दूध बढ़ाने वाला, थकावट, चक्कर, नशा, दरिद्रता, श्वास, खासी, अतिप्यास तथा क्षुधा को शान्त करने वाला है। जीर्णज्वर, सोजाक और रक्त पित्त को भी शान्त करता है। सर्वरोग नाशक तथा वृद्धावस्था को दूर भगानेवाला है। अर्थात् जो लोग गौ के शुद्ध, ताजा दूध को हमेशा पीते हैं, वृद्धावस्था उनसे सदा ही दूर रहती है।

**- आचार्य भद्रसेन**
**साभार: आदर्श गृहस्थ जीवन**

**आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।**

**Veda Prarthana - II**
**Regveda - 4**

# God is the Supreme Power that Can Help Us Acquire Virtuous Qualities

**- Acharya Gyaneshwarya**

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि। वलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजो मयि धेहि। मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।।

*यजुर्वेद 19/9*

**Tayjo asi tayjo mayi dayhi, viryam asi veeryam mayi dayhi, Balam asi balam mayi dayhi, ojo asi ojo mayi dayhi, Manyur asi manyur mayi dayhi, saho asi saho mayi dayhi.**

***(Yajur Veda 19:9)***

This mantra describes God's six attributes and is a prayer to acquire a small element of the same, to the extent possible, in our lives. The mantra starts by stating that God is Supreme Radiance that enlightens everyobody and God is the Source of Energy, which can energize us. Every human being in his/her life encounters situations where he/she can gain a lot of money, fame, honor (acually pseudo-honor) by using unfair or dishonest means. An average person on such occasions shortchanges dharma i.e. virtuous conduct, what is honest, just and fait to gain wealth and fulfill short term apparent success, however, such conduct, later leads to the person's downfall. There are only a few honorable persons who even under above stated circumstances stay resolute. They do not deviate from virtuous conduct even if it means loss of personal finances/wealth, and sometimes even personal safety and life. Such are the persons who acquire radiance in life and this radiance only comes from following God's message (as described in the Vedas and related scriptures) and God's true upasana i.e. meditation/worship. There is no other path to acquire radiance in life.

The second attribute of God is that He is Storehouse of Vital Energy/Vigor with a prayer to acquire a small element of that in our lives. Vedic scribtures mention veerya i.e. vital energy/vigor as the most valuable thing in the physical body. A person who is deficient in or lacks vital energy/vigor gradually becomes weak, ill, ages faster and gets discouraged in life. Such a person is far from being able to do much good for the society's welfare and/or charitable work because he/she due to low level of vital energy can barely take care of his/her personal needs and health. On the other hand a person who practices brahamacharya i.e. chastity (remains chaste in thought, word) as well as conserves his/her veerya, he/she enhances his/her vital energy/vigor, becoming a healthier, stronger, valiant person capable of withstanding most herdships in life such as hunger, heat, cold, and other deprivations. Moreover, he/she remains focused in successfully achieving his/her virtuous goals while also striving for the welfare of everybody in the society.

The third attribute of God, emphasized in this mantra, is that God is Infinite Strength with a prayer to God for helping us enhance both our personal praysical and spiritual strength. While physical health and strength are very important, spiritual strength is even of greater importance. Many persons even though they are physically strong yet when they encounter a personal or familial tragedy, strong opposition or obstacles in life which come naturally or are brought about by their competitiors or enemies, they bcome very discouraged, almost paralyzed to making a proper response to remedy the situation. Such persons for the sake of financial loss or fear of bodily harm reject the path of truth, dharma and justice. On the other hand persons with spiritual strength have the courage to forbear even great miseries in life 'the size of a mountain', constantly making the necessaary effort to reach and succeed in their virtuous goals. Obstacles and/or sufferings in life do not discourage or destroy their bravery. Instead, a person with spiritual strength moves forward with greater vigor.

The fourth attribute of God, emphasized in this mantra, is that God is Infinite Vitality, the Vital Force and Creator of the universe. The mantra is a prayer that we be imbued with lots of vitality to do virtuous deeds in our lives even when we encounter obstacles or opposition from others. People from early childhood onwards are taught that lying deceiving others, stealing, anger vanity etc. are bad and sinful. We should always refrain from them because persons enmeshed with such bad/sinful deeds suffer in many ways in their lives. However, most persons when faced with situations where they may gain personal prosperity, power, fame or other apparent rewards do not have inner vitality or strength to refrain from the sinful deeds. Such persons engrossed in their sinful tendencies gradually destroy the invaluable life God has given them.

The fifth attribute of God, emphasized in this mantra, is that God is Supreme Mettle/Might against wrong doers with a prayer to acquire courage in our lives to fight what is wrong or unjust in society. Many persons are very virtuous in their own personal deeds and do not incorporate any vices/sins such as lying, deceiving others, stealing, anger vanity etc. in their actions. However, they tolerate above mentioned sinful deeds and corruption performed by others in their family, friends or others in their society or nation. They do not have the courage to stop others from corruption or doing sinful deeds even though such deeds gradually destroy societies and nations. For nations and societies to succeed, they need persons who with all their might will fight what is wrong in the society and nation and use ther mind, words, wealth, time and actions to promote virtue and truth.

The sixth attribute of God, emphasized in this mantra, is that God is Infinite Fortitude, with a prayer to fill us with fortitude, courage and endurance. Persons who do not have enough patience, endurance and fortitude are easily overocome and defeated by hardships and obstacles that we all encounter in our lives. Such persons get easily discouraged and depressed, become helpless, and start suffering in their lives. They find recurrent failure even when they are completing minor tasks and the difficulties encountered are minimal or relatively quite small. Therefore, fortitude and endurance are special virtues that help a person succeed in life's journey.

Persons who follow God's message (as described in the Vedas and related scriptures) and perform God's true upasana i.e. worship, God fills them up with an element all of these essential six attributes described above. thus, such persons are able to successfully deal with obstacles that arise in all spheres in their daily lives. Dear God, fill us with radiance and make us radiant, fill us with vigor and help make us valiant, help us become full of strength, endow us with vitality, give us courage and might to fight what is wrong, and fill us with fortitude and endurance. We are praying to you from the bottom of our hearts that we are deficient in all of these six attributes and with Your help we can gain an element all of these in our lives. With Your help, may we succeed in all spheres of our personal lives and help others to sueceed in their lives.

In English language, the Sanskrit word manyur is often translated as God's wrath or anger towards wrong doers. As stated earlier on page #4, God is Perfection. He does not get angry or vengeful like human beings. God, howeve, does punish wrong doers; this ability of God is manyur. If manyur is to be translated as 'Wrath against wrong doers, 'then it must be kept in mind that it is not emotional anger or vengefulness. The Sanskrit word for anger is krodha, not manyur.

God's Radiance and Energy here refers to spiritual radiance that enlightens us and spiritual energy that energizes, activating our souls to perform virtuous deeds by enhancing soul's will power to follow truth and virtue even in the face of wrong temptations. It does no trefor to physical radiance or energy of objects such as sun, moon or stars.

The Sanskrit word veerya in English language is usually translated as semen, however, in Vedic scriptures the concept is that veerya is the vital energy of the body that makes a person full of vigor (in women it is called raja), A person who practices brahmacharya, he/she remains chaste in thought, word and action and uses veerya only for procreation but does not waste it on sexual pleasure. A person who conserves his veerya/semen, the veerya turns into neurological energy and enhances a person's life span, vital energies and vigor.

**To Be Continue....**

**आओ ! संस्कृत सीखें**

## खाद्य पदार्थानामनि (48)

**गतांक से आगे....**

Fruit juice - फलरसः
Brittel milk - पीयूषः
Chocolate - चाकलेहः
Chewing gum - चर्वणकम्
Jaggery water -गुडपानकम्
Sharbath - फलपानीयम्
Soda water - विक्षारजलम्
Vegetable soup -शाकतरला
Sprouts - अङ्कुराः
Moong sprouts - मुद्गाङ्कुराः
Groundnut sprouts-कलायांकुराः
Channa sprouts - चणकाङ्कुराः
Fluffed rice laddu - लाजमोदकम्
Pounded rice - पृथुकम्
Fluffed rice - लाजः
Fried chana - अभ्यूषः
Mango paste layer- आम्रमण्डकः
Shiraa - मोहनभोगः
Boondiladdu - लड्डुकम्
Ravvaladdu -चुर्णलड्डुकम्
Besanladdu -कुट्टितलड्डुकम्
Motichurladdu - मुक्ताचूर्णलड्डुकम्
Poli(Holige) - पोलिकः
Atraasa - अतिरसः
Jilebi - अमृतश कुली
Mysorepak - मैसूरपिष्टकम्
Rasagulla - रसगोलकम्
Gulabjamun - पानकगोलकम्

*- क्रमशः -*

***आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय***
**मो. 9899875130**

**प्रेरक प्रसंग**

## ठाकुर जी घर कैसे लौटें ?

पं. श्री रामचन्द्रजी देहलवी दिल्ली में बाबू सुन्दरलालजी अहलुवालिया के घर में किराये पर रहा करते थे। उनका एक मन्दिर भी था। मन्दिर के पुजारी से पण्डितजी की मित्रता थी। एक दिन पुजारी ने अपने पुत्र ऋषि को आवाज लगाकर पूछा कि रात होने वाली है, तूने मन्दिर को ताला लगाया अथवा नहीं? उसके नकारात्मक उत्तर पर पुजारीजी कुछ रुष्ट होकर बोले कि यदि कोई ठाकुरजी को उठाकर ले-जाए तो गये हुए ठाकुर आज तक कभी वापस आये हैं?

पूज्य पण्डित रामचन्द्रजी देहलवी सुनकर हँस पड़े और अपने पुजारी-मित्र से कहा, ''कभी आपने इनको गली-कूचों में घूमने का अवसर दिया है? ठाकुरजी बेचारों को क्या पता? वे तो आज तक कभी बाहर गये ही नहीं तो उन्हें अपने घर के मार्ग का कैसे पता चले? इसलिए एक बार जाने के पश्चात् आज तक लौटे नहीं।'' इस पर पुजारीजी हँस पड़े।

***- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु***

***साभार :***

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी***

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी*** : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

## 27वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर 11 कुण्डिय यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज रोहिणी का 27वां वार्षिकोत्सव 12 से 15 अप्रैल के बीच आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम के अन्तर्गत 11कुण्डीय महायज्ञ व वेद सम्मेलन प्रात: 7:30 से 1:15 बजे तक आयोजित किया जाएगा। यज्ञब्रह्मा डॉ. महावीर जी एवं उपाचार्य श्री रवीश शास्त्री जी होगें। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेन्द्र गुप्ता प्रधान वेद प्रचार मण्डल उत्तर मश्चिमी दिल्ली करेंगे। मुख्य वक्ता डॉ. महावीर जी (पूर्व कुलपति) एवं भजन श्री संदीप आर्य गिल प्रस्तुत करेंगे।

*– संजीव गर्ग, मंत्री*

## 62वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज कीर्तिनगर में ऋषि बोधोत्सव एवं 62वां वार्षिकोत्सव 22 मार्च से 1 अप्रैल तक मनाया गया। इसके अन्तर्गत प्रभातफेरी, ऋग्वेदीय यज्ञ प्रवचन, भक्ति संगीत, वेद प्रवचन आयोजित किए गए। *– सतीश चड्ढा, मंत्री*

## वीरांगनाओं को पुलिस प्रशिक्षण

आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी की आर्य वीरांगनाओं को पुलिस द्वारा आत्म रक्षा प्रशिक्षण 2 से 11 अप्रैल तक दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण महिलाओं के लिए बहुत उपयोगी है। आप भी अपनी बच्चियों को प्रशिक्षण हेतु भेजें।

*– शिव कुमार मदान, प्रधान*

## आर्य समाज स्थापना दिवस पर नि:शुल्क चिकित्सा शिविर सम्पन्न

आर्य समाज अलवर के तत्त्वावधान में 18 मार्च को आर्य समाज स्थापना दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पस्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय श्री नारायण दत्त गुप्ता की 93वीं जयन्ती के अवसर पर 98वां आयुर्वेद बाल रोग नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल स्वामी दयानन्द मार्ग में आयोजित किया गया। जिसमें बच्चों की कमजोरी, सांस में तकलीफ, हृदय रोग, कुपोषण एवं मौसमी बीमारियों व समस्त रोगों के लगभग 20 बच्चों का नि:शुल्क इलाज किया और नि:शुल्क आयुर्वेदिक दवाईयों दी गई। इस अवसर पर सर्वश्री अमर मुनि, अशोक कुमार आर्य, जगदीश प्रसाद गुप्ता, कै. रघुनाथ सिंह इत्यादि आर्यजन उपस्थित थे। *– प्रदीप कुमार आर्य, प्रधान*

**73वां वार्षिकोत्सव एवं गौशाला का शिलान्यस** : श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं श्रीराम कृष्ण गौशाला, खेड़ा खुर्द दिल्ली का 73वां वार्षिकोत्सव 8 अप्रैल 2018 को आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर वर अथर्ववेद पारायण यज्ञ, राष्ट्र रक्षा व गौ रक्षा सम्मेलन एवं अंधी व घायल गायों के लिये गौशाला भवन का शिलान्यास चौधरी श्री सुनील जाखड़ अध्यक्ष पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी एवं सांसद गुरदासपुर पंजाब के करकमलों द्वारा किया जाएगा। *– आर्य मनोज मान, मंत्री*

**अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में**

**37वां वैचारिक क्रान्ति शिविर: 17 से 27 मई, 2018**

**स्थान : आर्यसमाज रानी बाग, मेन बाजार, दिल्ली-110034**

आर्यजन अभी से तिथियां नोट कर लेवें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। जानकारी के लिए सम्पर्क करें – *जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री (9810040982)*

**शोक समचार**

## श्री प्रकाश देवीप्रसाद को भ्रातृशोक

आर्य प्रतिनिधि सभा साउथ अफ्रीका के मंत्री श्री प्रकाश देवी प्रसाद और पं. उषा देवीप्रसाद के भाई श्री धर्मप्रकाश देवी प्रसाद का निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार क्लेयर एस्टेट क्रेमेटोरियम हॉल में 27 मार्च को किया गया।

## श्री देवराज 'आर्यमित्र' नहीं रहे

आर्य समाज हरीनगर घण्टाघर के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं पूर्व प्रधान श्री देवराज आर्य 'मित्र' का 30 मार्च 2018 को निधन हो गया। वे आर्य समाज कृष्णा नगर से भी काफी समय तक जुड़े रहे। उनकी स्मृति में शांतियज्ञ एवं श्रद्धांजलि 30 अप्रैल प्रात: 10 से 12 बजे उनके निवास स्थान डब्ल्यू जेड-428 नानकपुरा हरी नगर पर होगी।

## आर्यविदुषी राजकुमारी कुमरा का निधन

आर्यसमाज कोटा की शिक्षाविद् आर्यविदुषी राजकुमारी कुमरा का 24 फरवरी 2018 को आकस्मिक निधन हो गया। श्रद्धांजलि सभा में जिला प्रधान अर्जुन देव चढ्डा सहित कोटा व क्षेत्र की आर्यसमाजों के पदाधिकारी, सदस्यों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

## पं. जयशंकर क्षेत्रपाल का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्यसमाज रेजथोपोर आर्यसमाज पीटर्मबर्ग के धर्माचार्य पं. जयशंकर क्षेत्रपाल का 3 अप्रैल, 2018 को निधन हो गया।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक**

## 51वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज जे.जे. कालोनी वजीरपुर दिल्ली का 51वां वार्षिकोत्सव 20 से 22 अप्रैल तक आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर श्री घनश्याम प्रेमी जी के भजनोपदेश होंगे। समापन समारोह एवं आर्य सम्मेलन 22 अप्रैल को प्रात: 10 से दोहपर 1 बजे तक सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की अध्यक्षता में आयोजित किया जाएगा। *– प्रेमपाल शास्त्री, प्रधान*

## नि:शुल्क योग शिविर एवं आध्यात्मिक सत्संग

आर्य समाज मोलडबन्द विस्तार, बदरपुर नई दिल्ली द्वारा 10 से 15 अप्रैल तक नि:शुल्क योग शिविर एवं आध्यात्कि सत्संग का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: 5 से 6 बजे योग शिविर एवं 5:30 से 9 बजे तक यज्ञ एवं सत्संग के कार्यक्रम पं. नरेशदत्त जी द्वारा होगे। समापन 15 अप्रैल को 24 कुण्डिय यज्ञ के साथ होगा।

*– गजेन्द्र सिंह चौहान, मन्त्री*

## 74वां वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताक्रूज का 74वां वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह 26 -28 जनवरी 2018 के बीच आयोजित किया गया। इस अवसर पर ऋग्वेद के मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ किया गया यज्ञ ब्रह्मा आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय नई दिल्ली एवं वेदपाठी पं. नामदेव आर्य, पं. विनोद कुमार शास्त्री, पं. नरेन्द्र शास्त्री एवं पं. प्रभारंजन पाठक जी थे।

इस अवसर पर आर्य पुरोहित सभा मुंबई द्वारा राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, प्रवचन एवं आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। महिला सम्मेलन श्रीमती विद्योत्मा बांगिया (नेरुल) की अध्यक्षता में हुआ। सभा महामंत्री श्री संगीत आर्य ने पुरस्कार वितरित किये। श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान पुरस्कार स्वामी सौम्याननद जी (मथुरा), वेदांग पुरस्कार आचार्य पं.वेदप्रकाश श्रोत्रिय (नई दिल्ली), स्व. नाराणदास हासानन्दानी विशिष्ट वेदांग पुरस्कार आचार्य सत्यजीत जी (अजमेर), मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार (हरिद्वार), श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार आचार्या नीरजा (तेलंगाना), श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार डॉ. शारदा (ओड़िसा), पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार आचार्य सुदर्शन देव (उड़िसा), स्व. आचार्य भद्रसेन युवा वैदिक विद्वान पुरस्कार आचार्य बुद्धदेव शास्त्री (ओड़िसा) एवं श्रीमती कृष्णा गांधी आर्य युवक पुरस्कार ब्रं अरुण (तेलंगाना) को प्रदान किया गया।

*– संगीत आर्य, महामंत्री*

पृष्ठ 5 का शेष

30 बजे। जेनेवा के एक हॉस्पिटल में भारत मां के एक सच्चे सपूत ने आखिरी सांस ली और उसकी मौत पर लाहौर की जेल में भगत सिंह और उसके साथियों ने शोक सभा रखी, जबकि वह खुद भी कुछ ही दिनों के मेहमान थे। लेकिन शहीदों को मृत्यु कभी स्पर्श नहीं करती अपितु वे स्वयं मर कर अमर हो जाते हैं। इतिहास साक्षी है। ऐसी महान् आत्माओं का बलिदान कभी व्यर्थ नहीं गया बल्कि समय आने पर एक ऐसे प्रखर प्रचंड रूप में प्रवाहित हो निकला और अनुगामियों के पथ प्रदर्शन ही नहीं किया अपितु समय पड़ने पर इस संघर्ष में अपने जीवन को न्योछावर कर दिया और पीछे बलिदानों के अवशेष रख गए आर्य समाज का प्रणाम ऐसे महावीरों को जिन्होंने राष्ट्र की स्वतन्त्रता लिए किस प्रकार अपना अन्तिम रक्त बिन्दु तक बहा दिया। तन-मन-धन की बलि देकर स्पष्ट कर दिया कि इनका सेवा कार्य में कितना उत्साह था तथा बलिवेदी से कितना ऊंचा प्रेम था। महर्षि दयानंद सरस्वती के मानस पुत्र, अमर क्रन्तिकारी पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा को उनकी पुण्यतिथि पर आर्य समाज का शत-शत नमन। *-राजीव चौधरी*

## स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज तिलक नगर कोटा में आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न हुआ। आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि आर्य समाज के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आर्यजन एवं आर्य समाज संकल्पित होकर कार्य करें। मुख्य अतिथि उपमहापौर श्रीमती सुनीता व्यास ने कहा कि स्त्री एवं दलितों के लिए आर्य समाज द्वारा किए गए कार्य सभी के लिए अनुकरणीय हैं। जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा हमें समाज सेवा के कार्यो के माध्यम से आर्य समाज से लोगों को जोड़ना चाहिए। *– नरेन्द्र विजय, मंत्री*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| ● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| ● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| ● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 2 अप्रैल, 2018 से रविवार 8 अप्रैल, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 05/06 अप्रैल, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4 अप्रैल, 2018


दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में आर्यसमाज नरौजी नगर में

## आर्यसमाज स्थापना दिवस सम्पन्न

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में 18 मार्च को आर्य समाज स्थापना दिवस आर्य समाज मन्दिर नौरोजी नगर में आयोजित किया गया। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य महेन्द्र भाई थे। ध्वजारोहण श्री रणधीर सिंह राणा एडवोकेट एवं श्री गोपी दरगन ने किया। दीप प्रज्ज्वलन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल जी आर्य एवं कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल, पूर्व विधायक श्री रामभज ने किया। मुख्य वक्ता डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, श्री रामभज जी, आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र जी थे। आशीर्वाद पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी ने दिया। समारोह की अध्यक्षता मण्डल प्रधान श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी जी ने की व मंच संचालन श्री चतर सिंह नागर महामंत्री द.दि. वे. प्र. मण्डल ने की। स्वागत अध्यक्षता श्री प्रकाशवीर शास्त्री,मंत्री आर्य समाज नौरोजी नगर थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने संबन्धित अधिकारियों से एन.पी.सी.सी. द्वारा किये जा रहे नौरोजी नगर के पुर्ननिर्माण एवं समाज की स्थिति एवं आवागन को सुचारु रूप से विधिवत् रहने हेतु चर्चा की। सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि नौरोजी नगर आर्य समाज (म.) इसी स्थान पर रहेगी ओर इस हेतु सभा पूरा प्रयत्न कर रही है। हमें कोई वैकल्पिक स्थान नहीं लेना है। तत्पश्चात् सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने समाज की यथास्थिति व रास्ते को सुचारु रूप से कायम रखने हेतु एक समिति का गठन किया। समिति के संयोजक डॉ. वीरपाल विद्यालंकार जी को नामित किया गया। अन्य सदस्य मण्डल एवं आर्य समाज नौरोजी नगर के अधिकारी होंगे। समिति इसकी निगरानी रखेगी व समय-समय पर इसकी रिपोर्ट सभा को देती रहेगी।

-प्रकाशवीर शास्त्री, मंत्री

*प्रतिष्ठा में,*

### तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

**63 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक**

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री


दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

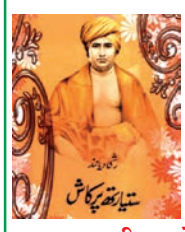

महर्षि दयानन्दकृत

**सत्यार्थ प्रकाश**

उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य मात्र

100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी

(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)

के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/- में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह